Subject :- Sociology Date :- 25/04/2020
Class : B-II (Subsidiary)
Topic :- सामाजिक समस्या और इसकी विशेषताएँ
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga

सामाजिक समस्या

Online Study Material No :- (50)

आज समाजशास्त्र के अन्तर्गत समाजिक समस्याओ के अध्ययन और उनके समाधान मे समाजशास्त्रीयो की अभिरुची बढ़ रही है। समाजिक समस्याओं के निराकरण मे दिलचस्पी रखकर ही समाजशास्त्र को एक महत्वपूर्ण और उपयोगी समाजिक विज्ञान बनाया जा सकता है। जेम्स डेविल और एन० ई० बार्न्स ने भी अपनी पुस्तक 'An Introduction to Sociology' मे इस तरह का विचार दिया है और लिखा है कि — "हमारा मुख्य उद्देश्य समाज को पहले से अच्छा बनाना है।" यह कार्य व्यवहारीक समाजशास्त्र का है। कि समाज का किस प्रकार निर्माण किया जाय। Gillin & Gillin ने अपनी पुस्तक 'Cultural Sociology' मे लिखा है कि समाजिक व्याधिकी समाजशास्त्र का अभिन्न अंग है जिस प्रकार रोग उसी प्रकार कि जानकारी वैज्ञानिक चिकित्सा शास्त्र का अंग है। इसी तरह Gillin तथा अन्य ने अपनी पुस्तक — 'Social Problems' मे समाजिक समस्याओं के अध्ययन के महत्व को दर्शाते हुये लिखा है। — "समाजिक समस्याओ का ज्ञान समाजशास्त्रीयों को विभिन्न प्रकार कि परिवर्तनशील दशाओ के अन्तर्गत मानविय संबंधो को अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है।"

इस तरह यह स्पष्ट होता है कि समाज शास्त्र को एक उपयोगी समाजशास्त्र बनाने के लिये इसके व्यवहारीक पक्ष को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

समाजिक समस्या का अर्थ और प्रकार एवं परिभाषा प्रत्येक समाज का ढाँचा कुछ नियमो और मूल्यों पर आधारीत होता है। इन्ही नियमो और मूल्यो के आधार पर एक विशिष्ट समाज के सदस्य एक दुसरे के साथ अभियोजन करते है। और अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पुरा करते है। कभी-2

समाजिक संगठनों एवं समाजिक संरचना में कुछ ऐसा अवरोध पैदा हो जाते हैं जो समाजिक संतुलन को बिगाड़ देते हैं। संक्षेप में समाजिक अभियोजन में बाधा डालने वाली दशाओं अथवा समाजिक जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाली दशाओं को ही समाजिक समस्याएँ कहते हैं।

समाजिक समस्या एक व्यक्तिगत घटना नहीं है बल्कि एक समाजिक घटना है। यदि एक या कुछ व्यक्तियों के पारस्परिक अभियोजन में बाधा उत्पन्न हो तब इसे समाजिक समस्या नहीं कहेंगे। क्योंकि यदि कोई बाधा व्यक्तिगत दोषों के कारण उत्पन्न होती है इसके विपरीत यदि कोई बाधा समाजिक संरचना के साथ इस तरह जुड़ जाती है कि उसके कारण अधिकांश व्यक्तियों का जीवन प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने लगता है। तभी उसे समाजिक समस्या कहा जायेगा। दूसरी बात यह है कि कोई बाधा संपूर्ण समूह के जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने के बाद भी यदि समाजिक संरचना से संबंधित नहीं है तो उसे हम समाजिक समस्या नहीं कहेंगे। उदाहरण स्वरूप — बाढ़, भूकंप, महामारी, सुखाड़ आदि ऐसी समस्याएँ हैं जो समाजिक जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। किन्तु इन्हें समाजिक समाजिक समस्या नहीं कहा जा सकता है क्योंकि ये समाजिक संरचना से संबंधित नहीं है इसके विपरीत बाल अपराध (Juvenille) भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति, मद्यपान, भ्रष्टाचार, जातिवाद, संप्रदायवाद, दहेजप्रथा, छुआछूत आदि का संबंध एक विशेष समाजिक संरचना है इसलिये इन्हें समाजिक समस्याओं के अन्तर्गत रखा जाता है। विभिन्न समाजशास्त्रीयों और समाजिक विचारकों ने समाजिक समस्याओं को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है कुछ विचारकों ने समाजिक समस्याओं को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है। उदाहरणस्वरूप Samuel Koenig ने समाजिक समस्या को एक दशा के रूप में परिभाषित किया है और लिखा है — "समाजिक समस्या उन प्रस्थियों या दशाओं का नाम है जिन्हें समाज

Scanned with CamScanner

हानीकारक मानता है, जिनमें ~~समाज~~ सुधार कि समाज को आवश्यकता होती है। "

इसी परिभाषा से यह पता चलता है कि समाजिक समस्या एक विशिष्ट प्रस्थिती या दशा है। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि समाजिक समस्या का हमेशा समाज पर बुरा प्रभाव पड़ा है, अतः समाजिक समस्याएँ समाज के लिये बुरा समझी जाती है। जिसका हानीकारक प्रभाव समाज पर पड़ता है, इसलिये इनका समाधान या निराकरण होती है। इसलिये इनका समाधान या निराकरण आवश्यक समझा जाता है।

Walker ने भी अपनी पुस्तक "social Problems" में समाजिक समस्याओं को एक दशा के रूप मे परिभाषित किया और लिखा है— "समाजिक समस्या एक विशिष्ट दशा है, जो चिंता, तनाव या संघर्ष या निराशा उत्पन्न करती है, और आवश्यकता कि पूर्ती में बाधा डालती है।" इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि समाजिक समस्या एक विशिष्ट दशा है, इस परिभाषा में समाजिक समस्याओं के अकार्यों को भी उल्लेख किया गया है, Walker का कथन है कि समाजिक समस्या हमारे अंदर चिंता, तनाव, तथा संघर्ष उत्पन्न करती है, साथ ही ये हमारे आवश्यकताओं के पूर्ती के मार्ग में भी बाधा डालती है, अतः समाजिक समाज के लिये अभिशाप ~~है~~ कही जा सकती है।

अनेक विद्वानो ने समाजिक समस्याओं को एक विचलित व्यवहार तथा मूल्यों के उल्लंघन के रूप में माना है, उदाहरण स्वरूप Lundberg तथा अन्य के अनुसार — "समाजिक समस्या एक विचलित व्यवहार है" जो समाज द्वारा अमान्य होता है और समाज को इस सीमा तक प्रभावित करता है, कि उसके प्रति समुदाय को सहनशीलता कि सीमा समाप्त हो जाती है। "

A.W. Green ने अपनी पुस्तक "Sociology" ने समाजिक समस्या को समाजिक मूल्यों अथवा नैतिक नियमों के उल्लंघन के रूप में परिभाषित किया है और लिखा है कि – समाजिक समस्या ऐसी दशाओं

कि समग्रता है। जिन्हे नैतिक आधार पर समाज में अधिकांश व्यक्तियो द्वारा नैतिक आधार पर समाज मे अनुचित समझा जाता है, को समाजिक समस्या कहा जा सकता है। उदाहरण स्वरूप बाढ़, भुकंप, महामारी, सुखा आदि को समाजिक समस्याओं की श्रेणी में नही रखा जा सकता है। इसके विपरीत अपराधकृत्य। बाल अपराध, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति, भ्रष्टाचार, मद्यपान दहेज प्रथा, बाल विवाह, जुआ छुत आदि समस्याओं का संबंध एक विशेष समाजिक संरचनाओं से है। इसलिये इन्हें समाजिक समस्याओं की श्रेणी मे रखा जायेगा।

1) समाजिक समस्या एक व्यैक्तिक घटना नही है बलकी इसमें समोहीकता का तत्व निहित होता है एक या कुछ व्यक्तियों के पारस्परीक अभियोजन में पड़नेवाली बाधा को समाजिक समस्या नही कहा जा सकता है। एक या कुछ व्यक्तियों के पारस्परीक अभियोजन में पड़ने वाली बाधा व्यैक्तिक दोषो का परिणाम हो सकती है। लेकिन जब कोई बाधा समाजिक संरचना से इस तरह जुड़ जाती है कि उसके कारण बहुत से व्यक्तियों का जीवन प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने लगता है तभी उसे हम एक समाजिक समस्या कहते है। इस अर्थ में समाजिक समस्या में समोहीकता का तत्व बहुत महत्वपूर्ण है।

2). यदि कोई विशेष स्थिती समाजिक अभियोजन में बाधक तो है किन्तु समुह इस स्थिती में किन्तु समुह इस स्थिती में सुधार करना आवश्यक नही समझता तो इस स्थिती को भी समाजिक समस्या नही कहा जा सकता। समाजिक समस्या केवल वह स्थिती है, जिसे हम दुर करना या सुधार करना आवश्यक चाहते है, तथा जिसमे सुधार करना संभव भी होता है।

3) समाजिक समस्या / समाजिक (कि अवधारणा) कल्याण से संबंधीत है जब कोई समाज समाज कल्याण के प्रति सचेत होता है, तभी कुछ विशेष व्यवहारो को समाजिक समस्या के रूप में देखा जाता है।

Scanned with CamScanner

4. Fullar & Myrdies के अनुसार :- जागरूकता और नीति-निर्धारण तथा सुधार सामाजिक समस्या से संबंधीत वे चरण है जिनके द्वारा किसी ~~विषय~~ समुदाय में इसका निर्माण संभव है

उपरलिखित ~~समस्याओं~~ परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक समस्या का तात्पर्य उन परिस्थियों अथवा दशाओं से है जिन्हें एक समुदाय के अधिकांश व्यक्तियों के द्वारा सुस्थापित नियमों सामाजिक मूल्यों तथा समुह कल्याण के विरुद्ध माना जाता है इसलियें इनका निराकरण करने का प्रयत्न किया जाता है कोई समाज ऐसा नही होता जहाँ समस्या नही पाई जाती दो अंतर केवल समस्याओं कि प्रकृति एवं मात्राओं का होता है

Characteristics of social Problems :-

1) समाजिक समस्याओं की प्रकृति सार्वभौमिक है अर्थात् सभी समाजोंमें सभी समाजिक समस्यायें पाई जाती है अंतर केवल समाजिक समस्या कि प्रकृति एवं गंभीरता में है, किसी समाज में किसी तरह कि समस्या पाई जाती है और दुसरे समाज में दुसरे तरह कि समस्या पाई जाती है इसी तरह समाज में कोई समाज में कोई समस्या अधिक गंभीर रूप में नही पाई जाती है जबकी किसी अन्यसमय में वही समस्या गंभीर रूप से पाई जाती है अतः यह कहा जा सकता है कि समस्या विहीन समाज कि कल्पना नही कि जा सकती है।

2. समाजिक समस्या समाज कि एक विशिष्ट दशा का द्योतक है, Samuel Koenig ने भी समाजिक समस्याओं को एक विशिष्ट दशा के रूपमें परिभाषित किया है और लिखा है :—

"समाजिक समस्या उन परिस्थितियों ~~का~~ या दशाओं का नाम है जिन्हें समाज अनीकारक मानता है।

3) समाजिक समस्या एक ऐसी दशा है जो समुदाय में बहुत से व्यक्तियों के विचलित व्यवहारों तथा समाज के आदर्श नियमों के उल्लंघन के रूप में देखने को मिलती है।

Lundberg ने समाजिक समस्या को एक विचलित व्यवहार के रूप में परिभाषित करते हुये लिखा है समाजिक समस्या एक विचलित व्यवहार होता है जो समाज द्वारा अमान्य होता है। इसी तरह A. W. Green ने समाजिक समस्या को समाजिक मूल्यों तथा नैतिक मूल्यों के रूप में लिखा है।

4) समाजिक समस्या एक ऐसी कष्टप्रद दशा है जो व्यक्ति एवं समाज दोनों कि विकास कि दृष्टी से बाधक है।

5) समाजिक समस्याएँ जनसाधारण के भावना के प्रतिकूल होती है इसका मतलब है कि समाजिक समस्या और भावना का निकट संबंध होता है यदि कोई दशा जनसाधारण कि भावना के प्रतिकूल न होतो उसे समाजिक समस्या नही कहा जासकता। उदाहरण स्वरूप किसी समय शादी, विवाह तथा समाजिक उत्सवों के अवसर पर वेश्याओ या नर्तकीयों के नाच गाने को उचित समझा जाता था। उस समय वेश्यावृत्ती समाजिक समस्या के रूप में नही मानी जाती थी किन्तु वर्तमान में अनेक कारणों से नारी के प्रति पुरुषों कि भावनाओं में परिवर्तन हो जाने से वेश्यावृत्ति को एक समाजिक समस्या के रूप में देखा जारहा है।

7) जो स्थिती या व्यवहार एक समाज विशेष की सांस्कृतिक विशेषताओं या परम्पराओं के प्रतिकूल होता है। उसे समाजिक समस्या के रूप में देखा जाता है समाज के सभी सदस्यों के सांस्कृतिक विशेषताओं को बनाये रखने कि आशा कि जाती है जब किसी समाज में काफी संख्या में लोग समाजिक मूल्यों आदर्शों नियमो मान्य व्यवहारों आचरणों प्रतिमानों के विपरीत व्यवहार करने लगते है तो ऐसे व्यवहार को समाजिक समस्या कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

उपरलिखित समाजिक समस्या ~~कि~~ कि परिभाषा से चार तत्व स्पष्ट होते है जो निम्नांकीत है: —

1) समाजिक समस्या एक ऐसी दशा है जिसमें सापेक्ष रुप से काफी लोग उलझे होते है यद्यपी यह कहना कठीन है कि कितने लोग।

2) इस दशा को अधिकांश लोगों कि मूल्य व्यवस्था कि दृष्टी से समाज के कल्याण के लिये खतरा समझा जाता है।

3) यह मानकर चला जाता है कि इस दशा को सामुहीक प्रयत्न के द्वारा नियंत्रण किया जा सकता है।

4) यह एक ऐसी दशा है जिसे समाज एक उल्लंघन के रुप में स्पष्ट किया है और लिखा है — "समाजिक समस्या ऐसी दशाओ कि समग्रता है जिन्हे नैतिक आधार पर समाज में अधिकांश व्यक्तियों द्वारा अनुचित समझा जाता है।"

5) समाजिक समस्याओं का संबंध उन्ही समाजिक समस्याओं से है जो एक विशेष समाजिक संरचना से संबंधीत होती है। भौतिक अथवा जैविकिय क्षेत्र की समस्याओ, सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन आया है। आदर्श नियम भी कुछ बदले है तथा कुछ नवीन व्यवहार भी पनपे है यही कारण है कि आज छुआ-छूत, बाल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह निषेध आदि को समाजिक समस्याए माना जाता है। किसी समय में ये समाजिक समस्या के रुप में नही थी। क्योकि इनसे संबंधीत व्यवहार को सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरुप माना जाता था। किन्तु आज ऐसा बदला हुआ व्यवहार आज हमारे सांस्कृतिक मूल्यों के विपरीत समझा जाता है और इसी कारण यह समाजिक समस्या के रुप मे समझा जाता है।

Closed.

Dr. S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U